करताल ताल बाजे विसाल, वेण रसाल, रमत रास सुन्दरी।। २ ।।

करताल में ताल बजती है। बांसुरी मीठी बजती है। ऐसे में श्री इन्द्रावतीजी रास खेल रही हैं।

नार सिणगार, भूखण सार, संग आधार, निरत करे सनंधरी।। ३ ।।

श्री इन्द्रावतीजी ने शृंगार सजाया। अच्छे आभूषण पहन कर वालाजी के साथ सुन्दर ढंग से नृत्य करती हैं।

घमझणाझण, जोडरणारण, बिछुडाठणाठण, छेकवाले फेरी फरी।। ४ ।।

पैर के पटकने से झनकार उठती है और आभूषणों के टकराव से रणकार उठती है। पैर के बिछुओं से ठन-ठन का स्वर उठता है। इस प्रकार श्री इन्द्रावतीजी घूम-घूमकर कूदती हैं।

वचन गाए, हस्तक थाए, भाव संधाए, देखाडे वालो खंत करी।। ५ ।।

गीत गाती हैं। ताली बजाती हैं। भाव दिखाती हैं और वालाजी को रिझाती हैं।

हांस विलास, सकल साथ, लेत बाथ, मध्य रामत हेत करी।। ६ ।।

सब सखियां नृत्य की रामत में बड़े आनन्द के साथ हंसती हुई वालाजी से लिपट जाती हैं।

वेख वसेख, राखी रेख, सुख लेत, वाहंत मुखे वांसरी।। ७ ।।

श्री इन्द्रावतीजी का भेष मनमोहक है। उन्होंने नृत्य करके सब सखियों की लाज बचाई है। वह रस भरी बांसुरी अपने मुख से बजाकर आनन्द लेती हैं।

धमके धारुणी, गाजती गारुणी, चांदनी रैणी, जोत करे जामंत री।। ८ ।।

धरती में धमक उठती है। आसमान गरजता है। चांदनी रात की चांदनी चमाचम चमक रही है।

रंग वनमां, सोभित जमुना, पसु पंखीना, सब्द रंगे थंत री।। ९ ।।

वन में आनन्द छाया है। यमुनाजी शोभायमान हैं। पशु-पक्षियों की आवाज हो रही है।

पसु पंखी, जुए जंखी, मिले न अंखी, सुख देखी रामत री।। १० ।।

ऐसे सुख की रामत देखकर पशु-पक्षियों की भी पलक नहीं झपकती। वे एकटक होकर आनन्द से देख रहे हैं।

निरत करे, खंत खरे, फेरी फरे, इंद्रावती एक भांत री।। ११ ।।

श्री इन्द्रावतीजी दृढ़ विश्वास के साथ घूमती हैं तथा विशेष प्रकार का नृत्य करती हैं।

वालती छेक, अंग वसेक, रंग लेत, छबके चुमन देत री।। १२ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कूदती हैं। विशेष ढंग से अंग को मोड़ती हैं तथा चुम्बन देकर आनन्द लेती हैं।

।। प्रकरण ।। ३० ।। चौपाई ।। ६०६ ।।

राग कालेरो

हमचडी सखी संग रे।
आपण रमसुं नवले रंग, सखी रे हमचडी।। टेक।।

Nijanand App

रामतडी छे अति घणी, करसुं सघली सार रे।
विविध पेरे सुख दऊं रे सखियो, जेम तमे पामो करार।। १ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि अब मन में बड़ी उमंग है, इसलिए हम नए ढंग से खेलेंगे। यह खेल अच्छा है। हम सब मिलकर खेलेंगे। तरह-तरह से सुख दूंगी, जिससे आपको आराम मिले।

अमने वेण वजाडी देखाडो, जेवो पेहेलो वायो रसाल रे।
वेण सांभलतां ततखिण वालैया, अमे जीव नाख्या तत्काल।। २ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि हमको वैसे ही बांसुरी बजाकर दिखाओ जैसे पहले बजाई थी, जिसे सुनकर हमने तुरन्त अपने तन छोड़ दिए थे।

जुओ रे सखियो वालो वेण वजाडे, अधुर धरी अति रंग।
वेण सांभलतां ततखिण तमने, काम वाध्यो सर्वा अंग रे।। ३ ।।

हे सखियो! देखो, वालाजी अधर पर रखकर बांसुरी बजाते हैं। इसको सुनकर तुम्हारे अंगों में पिया मिलन की तड़प जागृत हो उठी थी।

सुणो रे सखियो हूं वेण वजाडूं, वेण तणी सुणो वाणी।
खिण एक पासेथी अलगा न करूं, राखूं हैडामां आणी।। ४ ।।

वालाजी कहते हैं, हे सखियो! मैं बांसुरी बजाता हूं। तुम बांसुरी की आवाज को सुनो। एक पल भर के लिए भी मैं तुमको अपने से अलग नहीं करूंगा। तुमको मैंने अपने हृदय में बैठा रखा है।

उलट तमने अति घणो वाध्यो, वली रंग उपजावुं निरधार।
जेटली रामत कहो रे सखियो, ते रमाडूं आवार।। ५ ।।

तुमको बहुत उमंग उठी है। उससे भी अधिक मैं आनन्द उपजाऊंगा। फिर जितनी रामत कहोगी उतनी ही रामत खिलाऊंगा।

मान घणो मानवंतियोने, तामसियो झुंझार।
प्रेम घणो अंग आ संगे, एणे विरह नहीं लगार।। ६ ।।

सब सखियों में मान बढ़ गया है। तामसियों में अभिमान बढ़ गया है। उन्होंने धनी का केवल प्यार ही देखा है। वियोग का दुःख जरा भी नहीं देखा।

तामस मांहें तामसियो, एणी वातडी कहीं न जाय।
कहे इंद्रावती सुणो रे साथजी, वाले एम कीधां अंतराय।। ७ ।।

तामसी सखी अभिमान में हैं। उनकी बात कही ही नहीं जाती। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि उनका यह अहंकार भंग करने के लिए ही वालाजी अन्तर्ध्यान हुए।

॥ प्रकरण ॥ ३१ ॥ चौपाई ॥ ६१३ ॥

Nijanand App